National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 699-700

भवानी प्रसाद मिश्र जी का कवि कर्म

डॉ० निखिल उपाध्याय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश भारत।

प्रस्तावना

भवानी प्रसाद मिश्र जी का नाम उन गिने चुने कवियों में आता है, जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे। इनका रंग कई दृष्टियों में अपने समकालीनों से अलग खुलता है। प्रगति–प्रयोग युग तथा नयी कविता के अधिकतर कवि वैचारिक दृष्टि से जब साम्यवाद व समाजवाद के अधिक निकट दिखाई दे रहे थे, उस समय मिश्र जी गाँधी जी के विचारों में अपनी निष्ठा दिखा रहे थे। मार्च 1913 ई0 में जन्में भवानी जी ने 15–16 वर्ष की अवस्था से ही कविता करना प्रारम्भ कर दिया था। जीविका के लिए बीच में वर्धा के महिला आश्रम में अध्यापन भी किया परन्तु वहाँ मन न लगा। शायद उनकी काव्य साधना के लिए वह उपयुक्त क्षेत्र न था। 'कल्पना' पत्रिका के सम्पादक के रूप में रहते हुये भी वे हिन्दी से जुड़ें रहे, यहाँ तक कि आकाशवाणी की नौकरी भी उनके तथा हिन्दी के सामीप्य में बाधा न बन सकी। जब 1951 ई0 में अज्ञेय जी ने दूसरा सप्तक निकाला, तब मिश्र जी की कीर्ति चारों ओर फैल गयी।

गाँधीवादी भवानी जी की कविता में विचार और संवेदना हिन्दी भाषा की स्वाभाविक लय में निहायत सादगी और सरलता के साथ व्यक्त होती है। इन्होंने अधिकतर स्फुट गीतों तथा कविताओं की रचना की है। उनका प्रथम काव्य संग्रह "गीत फरोश" है जो 1956 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त चकित है दुख, अंधेरी कविताएँ, गाँधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी खुशबू के शिलालेख और शतदल कविता आदि प्रमुख काव्य संग्रह है। इनकी कुल 22 पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुयी हैं, जिनमें जिन्होंने मुझे रचा तुकों के खेल, कुछ नीति कुछ राजनीति शामिल है जो कि क्रमशः संस्मरण, बाल साहित्य, तथा निबंध संग्रह है। 'कालजयी' नामक खण्ड काव्य भी इन्हीं की कृति है। मिश्र जी के काव्य संग्रह संख्या में तो अधिक नहीं दिखाई पड़ते हैं परन्तु उनके यश की अधिकता, काव्य साधना की गुणवत्ता स्वयं बयाँ करती है। गाँधी के विचारों से जुड़ा होना भी उनके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण था। गाँधी–शांति–प्रतिष्ठान से सम्बद्ध होकर 'गाँधी मार्ग' मासिक पत्रिका का सम्पादन भी भवानी जी ने काफी समय तक किया। 1972 ई0 में 'बुनी हुयी रस्सी' पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। आपने भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' अलंकार भी प्राप्त किया। 1975 ई0 में आपका निधन हो गया।

महात्मा गाँधी के दर्शन से प्रभावित मिश्र जी हिन्दी काव्य जगत में गीत के अलबेले हस्ताक्षर के रूप में थे। गाँधीवाद की ईमानदारी उनके व्यक्तित्व तथा कृतियों में सहजता से दर्शनीय है। गाँधी जी के विचारों से प्रेरित होकर ही 1947ई0 से पूर्व ही इन्होंने स्कूल खोला और 3–4 साल के लिये कारावास का दण्ड भी पाया। जेल में लिखी कविता 'घर की याद' में इस घटना का जिक्र है। मिश्र जी गाँधी युग के महान साधक हैं। गाँधी शताब्दी के अवसर पर उन्होंने अपना काव्य संग्रह "गाँधी–पंचशती" निकाला। इसके माध्यम से गाँधी जी को श्रद्धांजली भी दी। गाँधी जी को नयी कविता के माध्यम से उन्होंने युग के सत्य को जितने साधिकार रूप से जनमानस में प्रवेश किया है, वह प्रशंसनीय है। गाँधी जी की तरह इन्होंने भी दण्ड शक्ति के स्थान पर प्रेमशक्ति, तथा राज्य शक्ति के स्थान पर लोक शक्ति को वरीयता अपनी कविता के माध्यम से दी–

"जियो और जीने दो,
प्रभु बरसा रहे है जो सुधा, सो सब को पीने दो।"
"गाँधी के देश के बेटों
यह मौका है हिंसा को नंगा करो
मेरी समझ में तुम मारो मत, मरो।"

हिन्दी की नयी काव्य धारा के प्रमुख कवि होने के बावजूद उनमें नयी कविता रचने का उन्मेष नहीं हुआ। गीत फरोश में संगृहीत उनकी कई रचनायें स्वतंत्रता के आन्दोलन में संघर्ष करते एक नये खून की अभिव्यक्ति लगती है। जहाँ एक ओर छायावादी काव्य प्रवृतियों से सम्पन्न रचनायें दिखती हैं वहीं दूसरी ओर कुछ रचनाओं में आकुल युवा ह्रदय का विक्षोभ भी दिखायी देता है। ये कई तरह के वादों से प्रभावित तो जरूर दिखतें है परन्तु किसी वाद विशेष के खूंटें से स्वयं को बाँधना पसन्द नहीं करते हैं। काव्य प्रवृत्तियों की दृष्टि से ये समकालीन कवियों से कुछ समानता रखते है परन्तु विषय प्रतिपादन में ये पुनः अलग राह के राही नजर आते हैं।

मिश्र जी का नाम हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों की सूची में भी आता है। इनके व्यंग्य तीखे, चुटीले, ममस्पर्शी होते हुये भी मिठास से युक्त होते हैं। उससे तिलमिलाहट नहीं बल्कि विनोद तथा सीख की उत्पत्ति होती है। उनके व्यंग्य बाणों से कोई नहीं बच सका है, नेता, समाज, साहित्यकार, कलाकार कोई भी नहीं। उन्होनें फरमाइशी कविता लिखने वालों की भी खूब खबर ली है। उनकी व्यंग्य प्रधान कृतियों में गीत फरोश तथा जाहिल बाने प्रमुख है। 'जाहिल वाने' अनौपचारिकता एवं अभिजात्य वर्ग हीनता के कारण प्रसिद्ध है जबकि गीत फरोश की प्रसिद्धि की वजह उसकी मौलिकता है। प्रभावपूर्ण शैली, निष्कपट बेबाकी, सत्योद्घाटन की अदम्य क्षमता इस काव्य संग्रह में दर्शनीय है–

''यह गीत सख्त सरदर्द भुलाएगा

यह गीत पिया को पास बुलायेगा
जी हाँ पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
फिर पीछे–पीछे अक्ल जगी मुझको
जी लोगों ने तो बेच दिए ईमान
जी आप न हों सुनकर ज्यादा हैरान
मैं सोच समझकर आखिर अपने गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजुर मै गीत बेचता हूँ।''

मिश्र जी जनचेतना के कवि हैं। उन्होनें जन जीवन के कोने कोने को झाँका है और अपनी लेखनी से कागज पर उतारा भी है। जन चेतना सम्बन्धी उनकी कविताओं में निम्नवर्गीय तथा मध्यमवर्गीय जन जीवन की झाँकी सहजता से देखी जा सकती है। कहीं अभाव ग्रस्त जीवन दिखाई पड़ता है तो कहीं तनाव तथा द्वन्द की परिस्थिति स्पष्ट है।

''हाय रे बचपन तलक सुख से न बीता
बाप रे दारिद्रय तूने खूब जीता।''

मध्यमवर्गीय जीवन का चित्र दिखाते समय भवानी जी ने राष्ट्रीय चेतना को नजरंदाज नहीं किया है। साथ ही मानव मूल्यों में भी उनकी आस्था अटूट है। वे मस्ती व प्यार के कवि हैं–

''हम क्यों खेमे में बटें रहें, हम क्यों आपस में कटे रहें।''
''कितना भी हो भ्रष्ट जमाना, हर जगह प्यार जा सकता है।''

प्रकृति का वर्णन करना भी मिश्र जी को पर्याप्त भाता है। उनका प्रकृति काव्य उनका अपना है और इस पर उनके व्यक्तित्व का इतना गहरा रंग चढ़ा है कि वह भी स्वतः ही अलग दिखने लगता है। आकाश, समुद्र, पृथ्वी, बादल, फूल आदि मिश्र जी के पसंदीदा विषय भी थे साथ ही साथ पसंदीदा प्रतीक भी। मानव तथा प्रकृति के सम्बन्ध का नवीनीकरण मिश्र जी ने किया है। सामान्य तथा आंचलिक, दोनों तरह के वर्णन देखने को मिलते है। सामान्य विषय फूल, पर्वत, आकाश जैसे है व सतपुड़ा के जंगल जैसे आंचलिक विषय भी हैं।

'अजगरों से भरे जंगल, अगम गति से परे जंगल
सात–सात पहाड़ वाले, बड़े–छोटे झाड़ वाले
शेर वाले बाघ वाले, गरज और दहाड़ वाले
कम्प से कनकने जंगल, ऊघतें अनमने जंगल।'

वैसे तो मिश्र जी के काव्य में प्रेम को बहुत स्थान नहीं मिला है परन्तु काव्य में प्रेम भावना का पूर्णतया अभाव है, ऐसा नही कहा जा सकता है। 'मानव जी' के शब्दों में "उनका प्रेम एक पक्षीय और असफल कहा जा सकता है। उनकी प्रेम भावना एक पक्षीय इसलिए है कि उसमें अज्ञात के प्रति प्रेम चर्चा नहीं है।" कमल के फूल कविता उनकी प्रेम भावना को व्यक्त करती है जिसमें कमल को प्रेमभावना का प्रतीक माना गया है–

फूल लाया हूँ कमल के क्या करू इनका
पसारें आप आँचल छोड़ दूँ हा जाय जी हल्का।

इनके काव्य पर नतो छायावादी प्रेम का प्रभाव है न ही वह संयोग तथा वियोग तक सीमित है बल्कि वह मंगल कामना से ओत–प्रोत है।

भवानी प्रसाद मिश्र जी का व्यक्तित्व अपने आप में अनूठा था। इसी व्यक्तित्व की झलक उनके काव्य में दिखती है। वे सहजता तथा सादगी के कवि है। उनकी सादगी का पता उनके पुत्र अनुपम मिश्र के एक लेख से लगता है जिसके अनुसार–

''हर पिता पर उसके बेटे–बेटी कुछ लिखें, यह उन्हें पसन्द न था। पिता के मरते बेटी–बेटे स्मारिका छापें, खुद लिखें, लिखवायें संस्था खड़ी कर दें, यह सब भी उन्हें पसन्द न था। उनकी मृत्यु के बाद हमने उनकी इस बात को ध्यान में रखा है।''

मिश्र जी के इन विचारों से उनकी सादगी स्पष्ट होती है। इसी सादगी वाली शैली के कारण वे नयी कविता के कवियों में अलग हैं। काव्य की अभिव्यक्ति को वे एक स्वतः होने वाली प्रक्रिया मानते हैं। मुक्तक छन्द उनका प्रिय छन्द है। लघु तथा दीर्घ मुक्तकों में लयात्मकता उनकी एक विशेषता है। वे अभिधा के कवि है परन्तु भाषा का अलंकार से बोझिल होना उन्हें पसन्द नहीं। सीधी साधी उपमायें उनके काव्य में आसानी से देखी जा सकती हैं। बिना मां के किसी निरूपाय बच्चे की तरह 'मैं अकेला' में उनकी उपमा का सहज प्रयोग दृष्टव्य है। प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग उनके काव्य में हैं। प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने व्यंग्य काव्य में भी गूढ़ बाते कह डाली है। ''सूरज के उजाले को पीछे छोड़ते हुए किनारे की तरफ आ रही है काली नावें'' में सूरज आदर्श जीवन मूल्य का तथा काली नाव कुप्रवृत्तियों का प्रतीक है।

भवानी जी कला की अपेक्षा कथ्य पर अधिक ध्यान देने वाले कवि है। उनकी भाषा सरल व सहज होने के कारण उन्हें जनकवि बना देती है। भाषा में उर्दू तथा संस्कृत शब्द प्रयोग भी दिखते हैं तथा कहीं कहीं तो व्याकरण के नियमों का उल्लंघन भी भाषा करती है, परन्तु इन सबका उद्देश्य भाषा को सामान्य जनमानस की भाषा के स्तर पर पहुँचाना है।

इस प्रकार हम यह कह सकते है गाँधीवादी भवानी प्रसाद मिश्र जैसे व्यंग्य शैली के कवि विरले ही मिलते है जो कि अपनी अनोखी शैली में प्रेम, जनचेतना, सहजता, विनोद तथा गाँधी वादी विचार सामन्जस्य पूर्ण ढंग रख सकते हैं तथा अपनी मौलिक उद्भावनाओं के कारण नयी कविता के सूत्रधारों में अपना बेजोड़ स्थान रखते हैं।

सन्दर्भ

1. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ सं0 208
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रोफेसर रामकिशोर शर्मा, पृष्ठ सं0 273
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं0 डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 हरदयाल, पृष्ठ सं0 628